International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666; Vol.10, Issue-1, January-March, 2023
Impact Factor: 6.023; email: drtvramana@yahoo.co.in

# "कल्याण का अंत"-लोकहित भावना, पर्यावरण चेतना और प्रकृति संवेदनाओं पर निहित स्वार्थ, ऐश्वर्य का मदहोश और छल-प्रवंचनाओं का कुठाराघात

**डी.रघुरामप्रसाद, हिन्दी प्राध्यापक**
**सरकारी स्नातक महाविद्यालय, तिरुवूरु**

**जन्म**- जयनंदन जी का जन्म 26 फरवरी 1956 को बिहार राज्य के नवादा जिला, मिलकी गाँव में हुआ अपने पिता श्री लालेश्वर प्रसाद एवं माता श्रीमती मनका देवी की दो संतानों में से ये छोटे थे। मध्य वर्गीय कायस्थ परिवार के जयनंदन जी का सारा बचपन मिलकी में संयुक्त परिवार में सबके प्यार और अनुशासन में बीता|

**शिक्षा**: जयनंदन जी की प्राथमिक शिक्षा गाँव के मदरसे में हुई | दो वर्ष बाद सन् 1967 में सातवीं बोड की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की| वे मैट्रिक तक हमेशा अव्वल आते रहे। सन 1972 में मैट्रिक की परीक्षा में पूरे विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए| जयनंदन ने स्वतंत्र छात्र के रूप में इंटरमीडियट, स्नातक और परास्नातक एम.ए (हिन्दी) की योग्यता प्राप्त की| सन 1973 में उनको टाटा स्टील में अप्रेंटिसशिप मिली| उसे सफलतापूर्वक पूरा करके टाटा ग्रोथ शॉप में मशीन ऑपरेटर नियुक्त हुए और सन 1994 तक वह काम किया| उसके बाद गृह पत्रिका के संपादक बने|

**व्यक्तित्व**

अध्ययनशील : जयनंदन जी को पढने में बहुत रूचि है| वे पढाई को मानसिक व्यायाम मानकर भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं, ग्रंथों के द्वारा भारतीय भाषा-साहित्य का गहन-अध्ययन करते रहे| संवेदना से सामाजिक समस्याओं को समझकर, अपनी रचनाओं के माध्यम से न्यायपूर्ण समाधान देने का प्रयास करते रहे|

**कृतित्व**: जयनंदन जी की पहली कहानी आगरा की एक पत्रिका 'युवक' में 1981 में छपी, तो दो साल बाद बहुप्रतिष्ठित पत्रिका सारिका में आई। इसके बाद तो धर्मयुग, रविवार, गंगा,

कादम्बिनी, सारिका, हंस, पहल, वर्तमान साहित्य, इंद्रप्रस्थ भारती, समकालीन भारतीय साहित्य, इंडिया टुडे, आउटलुक, शुक्रवार, कथादेश, सबरंग, अक्षरा, अक्षरपर्व, आजकल, कथाबिंब, कथाक्रम, पलप्रतिपल, पश्यंती, हिमप्रस्थ, संबोधन, आधारशिला, नवनीत, निकट, मित्र, नया ज्ञानोदय, वसुधा, अन्यथा, वागर्थ, पाखी, बहुवचन, किस्सा, मधुमती, मंतव्य, माटी आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगभग 150 कहानियां प्रकाशित हुईं। इनके लिखे नाटकों का दिल्ली, देहरादून, इलाहाबाद, पटना, रांची, नागपुर, जमशेदपुर आदि शहरों में कई-कई बार मंचन हुआ। आकाशवाणी और दूरदर्शन के कई चैनलों पर नाटक और कहानी के टीवी रूपांतरणों का प्रसारण हुआा।

जयनंदन की अब तक कुल 35 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिसमें 'श्रम एव जयते', 'ऐसी नगरिया में केहि विधि रहना', 'सल्तनत को सुनो गांववालो', 'विघटन', 'चौधराहट', 'मिल्कियत की बागडोर', 'रहमतों की बारिश', , 'मेरी प्रिय कथाएँ', 'मेरी प्रिय कहानियां', 'सेराज बैंड बाजा', 'संकलित कहानियां', चुनी हुई कहानियां', 'गोड़पोछना', 'चुनिंदा कहानियाँ', 'निमुंहा गाँव', 'आईएसओ 9000', 'मायावी क्षितिज' व 'मंत्री क्या बने, लाट हो गये' आदि कहानी संग्रह समेत तीन नाटक हैं। इनकी कहानियों का अंग्रेजी, स्पैनिश, फ्रेंच, जर्मन, नेपाली, तेलुगु, मलयालम, तमिल, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, मराठी, उड़िया, मगही आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ है, जबकि कुछ कहानियों पर रांची वि.वि., राजर्षि टंडन मु.वि.वि., मगध वि.वि., कोल्हापुर आदि से शोधार्थियों को पीएचडी की डिग्री भी मिली। इन्हें कृष्ण प्रताप स्मृति कहानी प्रतियोगिता (वर्तमान साहित्य), कथा भाषा प्रतियोगिता तथा कादम्बिनी अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में कई बार कई कहानियां पुरस्कृत हुईं। इन्होंने 20 वर्ष तक टाटा स्टील की गृह पत्रिका का संपादन किया।

## कथावस्तु:

'कल्याण का अतं 'कहानी जयनंदन का कथा-संकलन 'भीतर घात' में है | यह परंपरागत वसुधैव कुतुबकम के विरुद्ध मनुष्यों की अदूरदर्शिता,मतलब-परस्ती और धोखेबाजी की दास्तान है | कोचाई मंडल, उसकी पत्नी राधामुनी, उनका बेटा निमाई और कॉन्ट्रैक्टर डोगरे साहब इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं | कोचाई

मंडल को विरासत में पचास बीघा विशाल कल्याण-तालाब मिलता है जिसको वह गतिशील, जीवंत व शीतल अमृत-कुंड, अगम व रहस्यमय क्रियाओं की रंगशाला, संस्कृति का अंग तथा सार्वजनिक धरोहर मानता है | अपने लिए जीवनाधार, जनता की श्रद्धा-भक्ति व स्नान-पान का केंद्र और पर्यावरण – मित्र उस सौ वर्ष पुराने तालाब की रक्षा में जी जान से जुट जाता है|

कोचाई मंडल का बेटा निमाई नौसिखिया है | उसके विचार में अपने परिवार की विपन्नता और तिरोगमन का मूल कारण अपने पिता का परंपरागत जल-पेशा है| इसलिए उस दरिद्रता की जड़ से अपना पिंड छुड़ाना चाहता है | पचास बीघा विशाल कल्याण-तालाब को ज़मीन के रूप में बदल देना चाहता है | फिर उसे मुँहमाँगे दामों किसी उद्योगपति को बेचकर रातोंरात करोडपति बनने के सपने देखता रहता है | उसकी माँ राधामुनी भी बहती गंगा में हाथ धोना चाहती है | शहरीकरण के परिप्रेक्ष्य में बढ़ती ज़मीन की माँग से फ़ायदा उठाने, पचास बीघा विशाल तालाब को भरवाकर करोड़ों रूपये हासिल करना चाहती है मगर अपने से ज्यादा तालाब से, ज़मीन व घर से ज्यादा जल में मग्न रहनेवाले अपने पति कोचाई से मन में कुढती रहती है | उचित अवसर के इंतज़ार में चुप्पी साध लेती है | जैसे ही अपना नौसिखिया बेटा निमाई परपरागत जल-पेशे से अपना घृणा व्यक्त करता है, कल्याण- तालाब को ज़मीन में बदलने करोड़ों रूपये कमाने की बात करता है, उसकी लालसाओं को बल मिलता है और वह झटपट उसका समर्थन करती है|

कल्याण-तालाब के संबंध में अपनी पत्नी और बेटे के विचारों से सुपरिचित कोचाई टस से मस नहीं होता है| बल्कि तालाब के विषय में निमाई की सोच को बदलने की कोशिश करता है| उसे अपने परदादा सुतारू मंडल के डायरी का एक पन्ना उसे दिखता है जिस में लिखा होता है- " तालाब की अहमियत रुपयों-पैसों से नहीं आँकी जा सकती। और अगर रुपयों से आँकी जाए तो उसके जरिए जो मानवीयता पर परोपकार हो रहा है, वह अरबों-खरबों से भी कहीं ज्यादा है। जब एक कुआँ बन जाता है या तालाब, तो वह किसी की निजी संपत्ति नहीं रह जाता, वह

सार्वजनिक हो जाता है।" पढ़कर निमाई उस पन्ने की चिन्दी-चिन्दी कर देता है|

कोचाई कल्याण-तालाब को जीवंत रखने के प्रयास जारी रखता है | लोखट पहाड़ से निकलती बरसाती नदी की दिशा को उसकी तरफ मोड़ देता है ताकि वह हमेशा लबालब भरा रहें | मगर बढती शहरीकरण से, निष्ठुर लोगों के हाथों अंधाधुंध काट-कपच से पहाड़ी जंगल सफाचट हो जाता और उससे बहती बरसाती नदी क्षीण पड़ जाती है | फलस्वरूप कल्याण-तालाब अचानक सूखकर मरुस्थल हो जाता है | मानो कोचई पर पहाड़ टूट पड़ता है | वह तिलमिला उठता है | सूखे तालाब को लेकर वह गहरी चिंता में पड़ जाता है कि " पता नहीं किस अर्जुन ने या किस राम ने अग्निबाण चलाया कि सौ वर्षों से भी ज्यादा उम्रवाला कल्याण तालाब सूख गया।"

अप्रत्यासित व अप्रयास सूख गये कल्याण तालाब को देखकर निमाई और राधामुनी अपने भाग्य को सराहते हैं| अपनी मंशा पूरी करने आँख के अंधे पर गाँठ के पूरे उद्योगपतियों की राह देखने लगते हैं | हालांकि उनके यहाँ बड़े-बड़े उद्योगपतियों का आना-जाना बना रहता हैं | लेकिन कोचाई उन उद्योगपतियों से साफ-साफ कह देता है- , "जब तक मैं कायम हूँ, तालाब की ज़मीन पर दूसरा कोई काम नहीं होगा। मुझे विश्वास है कि लोखट पहाड़ी का नाला फिर से जीवित होगा। मैं पहाड़ पर गाछ लगाऊँगा और वहाँ फिर हरा-भरा एक जंगल बसेगा।" कोचाई का यह फैसला सुनकर निमाई और राधामुनी हतप्रभ हो जाते हैं | जब सीधी उंगली से घी नहीं निकलता है, तब टेढ़ी उंगली से निकालना पडता है | इसलिए वे दोनों किसी शिपिंग कंपनी के अधिकारी प्रदीप डोगरे से मिलकर गुप्त योजना बनाते हैं| योजना के अनुसार प्रदीप डोगरे कोचाई से मिलता है | उसकी गोताखोरी की तारीफों के पुल बाँधता है और एक लाख रूपयों का चेक उसके हाथ में थमा देता है और बंगाल खाड़ी में डूबे सोने की ईंटों से लदे अपने ज़हाज़ को ढूँढ निकालने की याचना करता है | उसे कल्याण-तालाब से दूर अपने शिपिंग कंपनीवाला शहर ले जाता हैं | वहाँ उसे बंगाल खाड़ी में उतारकर डूबी ज़हाज़ को ढूँढ निकालने

में लगा देता है | जब डेढ़-दो महीनों की गोताखोरी के बावज़ूद कुछ हाथ नहीं लगता है और अपनी नाकामयाबी पर कोचाई खेद प्रकट करता है, तब प्रदीप उससे कहता है-"आपके गोता लगाने से हमें जो हासिल करना था, वह हमने कर लिया है।" कोचाई अपना शहर लौटकर कल्याण तालाब की जगह "साइट ऑफ डोगरे बिल्डर्स एंड कॉन्ट्रैक्टर्स" का बड़ा-सा बोर्ड देखकर दंग रह जाता है | उसे लगता है-कल्याण को नहीं मानो जीते जी उसे ही दफ़नाया जा रहा है |

**2.पात्र:** 'कल्याण का अंत' कहानी का प्रधान पात्र कोचाई मंडल है जो कल्याण-तालाब का एकैक संरक्षक है और उसकी पत्नी राधामुनी, उसका बड़ा बेटा निमाई, उद्योगपति प्रदीप डोगरे गौण पात्र हैं; जो बहती गंगा में हाथ धोना अच्छी तरह जानते हैं और निष्ठुर लोगों की करतूतों से सूख गये कल्याण-तालाब की अंत्य क्रियाएँ करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं|

**कोचाई मंडल का चरित्र-चित्रण:** कोचाई मंडल लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित उदात्त पात्र है जो नीतिकार रहीम की बात की याद दिलाता है-"रहिमन पानी रखिए-बिन पानी सब सून..| वह अपने परदादाओं से धरोहर के रूप में मिले तालाब को धन-उपार्जन का साधन या अपने एकाधिकार का उपादान नहीं बल्कि अपना जीवन-धन मानता है | पूंजीपतियों की तरह उसका मूल्य लाखों, करोड़ों रूपयों में नहीं आँकता बल्कि उससे संपन्न सामाजिक प्रयोजन, पर्यावरण संतुलन, प्राणिकोटि का सुख-चैन से आँकता है | पत्नी राधामुनी और बड़ा बेटा निमाई की महत्त्वाकांक्षाओं के विरुद्ध उसके संरक्षण को अपना परम कर्तव्य मानता है | इसलिए कल्याण-तालाब के जलकोश को अक्षुण्ण बनाए रखने केलिए बरसात में बहती लोखट पहाड़ी नाली की दिशा उसकी तरफ मुडवाता है | उसके लाख-प्रयासों के बावजूद निष्ठुर लोगों द्वारा नैसर्गिक जंगल की अंधाधुंध कटाई से पहाड़ी नाला क्षीण पड़ जाता है| फलस्वरूप कल्याण-तालाब सूख जाता है| उसी की ताक में लगे राधामुनी, निमाई और उद्ग्योगपति प्रदीप डोगरे को मौका मिल जाता है और वे सब मिलकर कोचाई को चकमा देकर 'कल्याण का अंत' (अंत्येष्टि!) संपूर्ण कर देते हैं|

**राधामुनि और निमाई का चरित्र-चित्रण** : कोचाई मंडल और उसकी पत्नी राधामुनी व बड़ा बेटा निमाई के चिंतन में आकाश-पाताल का अंतर है | वे दोनों अपने परिवार की दरिद्रता का दोष कोचाई मंडल के तालाब-संरक्षण के पेशे को देते हैं और निमाई उसके प्रति अपना घृणा प्रकट करते हुए कहता है-"इस पेशे ने हमारे पूरे खानदान को बौना बनाकर गरीबी के घेरे में सिमटे रहने के लिए अभिशप्त कर दिया| भला मछली मारकर, नाव खेकर दो रोटी जुटाने से ज्यादा क्या कर सकता है | मैं कोई सा भी दूसरा काम कर लूँगा | लेकिन पानी से जुड़ा कोई काम नहीं करूँगा ..|" विरासत में कोचाई मंडल को प्राप्त कल्याण-तालाब पर वे स्वत्वाधिकार जमाना चाहते हैं और पच्चीस बीघे का लंबा-चौड़ा कल्याण-तालाब का मूल्य रूपयों में आंकते हैं| उसे ज़मीन में रूपांतरित कर, उद्योगपतियों को लाखों-करोड़ों रूपयों में बेचना चाहते हैं | **तालाब के मूल्य के संबंध में अपनी पूंजीवादी दृष्टि प्रकट करते हुए निमाई अपनी माँ राधामुनी से कहता है-"....हमें तालाब से फंसी ज़मीनों का बाज़ार-भाव से रिटर्न पाने केलिए पानी से अपना पिंड छुडाना ही होगा|** पचास बीघे का रकबा इस इलाके केलिए लाख की नहीं, करोड़ की संपत्ति साबित होगा ..|" राधामुनी अपने बेटे के समर्थन में कहती है-"मैं तो कब से यह चाहती रही कि इस तालाब को भरवाकर हम सिर्फ इसे बेच दें, तो उसी से कई पीढयों से जमी हमारी दरिद्रता छू मंतर हो जाए | लेकिन तुम्हारे इस बाप की जिद और पानी में बसे इनके प्राण को देखकर मैं कोई सख्त कदम उठाने के लायक न बन पायी..|" जब कोचाई मंडल दादा की लिखी डायरी का पन्ना दिखाकर समझाना चाहता है-'तालाब की अहमियत रूपये-पैसों से नहीं, बल्कि उसके ज़रिये मानवीयता को हो रहे परोपकार से आँकी जाती है' तब निमाई डायरी के उस पन्ने की चिन्दी-चिन्दी कर डालता है |

शहरीकरण की चपेट से जब कल्याण-तालाब सूख जाता है तो निमाई और राधामुनी खुश होते हैं कि अब हमें टोकनेवाला कोई नहीं, पच्चीस बीघा बड़े भूखंड का व्यावसायिक उपयोग अब हम कर सकेंगे और इसे मुँह-माँगे दामों बेचकर रातोंरात हमारी कायापलट कर

सकेंगे | ज़मीन का सौदा करने आये प्रदीप डोगरे के साथ वे मिलीभगत करते हैं | पानी का मेंढक कहलानेवाले कोचाई की कमजोरी का भरपूर फायदा उठाते हैं | पचास करोड़ सोने से लदे जहाज़ को समुन्दर से बाहर निकालने के बहाने उसे अपने शहर से बाहर भेज देते हैं और इधर उद्योगपति प्रदीप डोगरे से ज़मीन का सौदा करके कल्याणकारी तालाब के अंत में बाकी कसर पूरा कर देते हैं |

**प्रदीप डोगरा का चरित्र चित्रण:** प्रदीप डोगरा एक उद्योगपति है जो शहरीकरण के ज़माने में कल्याण-तालाब की पच्चीस बीघा विशाल ज़मीन का मूल्य अच्छी तरह जानता है| इसलिए उसे तुरंत हथियाने के दाँव-पेंच शुरू कर देता हैं | रातोंरात करोडपति बनने के महत्त्वाकांक्षी राधामुनी और निमाई से मिलता है उनको पैसों का लालच दिखाकर फाँस लेता है | फिर सूखते कल्याण-तालाब को लेकर चिंतित, पैसों की तंगी से पीड़ित कोचाई मंडल से मिलता है | किसी शिपिंग कंपनी का अधिकारी के रूप में अपना परिचय देता है | अनहोनी को होनी कर दिखाने की उसकी गोताखोरी की सराहना करता है और सोने की ईंटों के साथ समुन्दर में डूबे अपने जहाज़ को ढूँढ निकालने में उसकी मदद माँगता है | उसके हाथ में एक लाख रूपये का चेक थमाकर, उसका अभाव और पानी और गोताखोरी से उसका लगाव से फायदा उठता है | उसे समुंदर में डूबे, करोड़ कीमतवाली सोने की ईंटों से लदे जहाज़ को निकालने कल्याण-तालाब से दूर, शहर में ले जाता है और डेढ़-दो महीनों तक उसे गोताखोरी में उलझा रखता है और इस बीच सूखे कल्याण तालाब में मिट्टी भरवाकर उसका काम तमाम कर देता है| अपने पाव आप कुल्हाड़ी मरनेवाले स्वार्थी लोगों के कारण सूख गए 'कल्याण-तालाब को फिर से जीवित करने की' कोचाई मंडल की आशाओं का गला घोंट देता है|

**कथोपकथन:** प्रभावोत्पादक संवाद 'कल्याण का अंत' कहानी को सवेदनशील और विचारोत्तेजक बनाते हैं| पानी के संबंध में कोचाई मंडल के दार्शनिक कथन " पानी जिस तरह दुनिया-भर के विकार और गंदगी साफ करता है, अगर कोई आठ-दस दिनों तक पानी के संपर्क में रह जाए, चारों ओर पानी ही पानी कोई दूसरा नहीं..तो

उसके मन का विकार भी धुल जाता है पानी दया, करुणा, ममता और आत्मीयता का पर्याय है..वह आदमी को तरल, सरल और निश्छल बना देता है| पानी में सारे तत्त्व हैं, कोई चाहे तो सिर्फ पानी पीकर पूरी उम्र जी सकता है| बहुत सारे ऐसे जलचर हैं जो बिना खाए भी पानी में रहकर जी लेते हैं.." से पानी की तंगी और पानी पर स्वत्त्वाधिकार के लिए लडाई-झगड़े होने वाले वर्तमान ज़माने में पानी का महत्त्व रोशनी पड़ती है | कोचाई की निस्स्वार्थ भावना, पर्यावरण-कल्याण चेतना और लोकहित कामना प्रकट होती है | रहीम की सूक्ति 'रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून .. की याद आती है |

**तालाब के मूल्य के संबंध में अपनी पूंजीवादी दृष्टि और महत्त्वाकांक्षा प्रकट करते हुए निमाई अपनी माँ राधामुनी से कहता है-"....हमें तालाब से फंसी ज़मीनों का बाज़ार-भाव से रिटर्न पाने केलिए पानी से अपना पिंड छुडाना ही होगा |** पचास बीघे का रकबा इस इलाके केलिए लाख की नहीं, करोड़ की संपत्ति साबित होगा ..|"अपने पूर्वजों के पानी के व्यवसाय से घृणा प्रकट करते हुए माँ राधामुनी से वह कहता है-"इस पेशे ने हमारे पूरे खानदान को बौना करके गरीबी के घेरे में सिमटने के लिए अभिशप्त कर दिया | भला कोई मछली मारकर, नाव खेकर दो रोटी जुटाने से ज्यादा और क्या कर सकता है ? मैं कोई सा भी दूसरा काम कर लूँगा मगर पानी से जुड़ा कोई काम नहीं करूँगा | "तब राधामुनी अपने बेटे का अंध समर्थन करते हुए कहती है-"तुमने बिल्कुल ठीक फैसला किया है | मैं भी यही चाहती हूँ कि बाप की तरह पानी का प्रेत तुम लोगों पर सवार न हो..| मैं कब से यह चाहती रही कि इस तालब को भरवाकर हम सिर्फ इसे बेच दें तो उसी से कई पीढ़ियों से जमी हमारी दरिद्रता छू मंतर हो जाए..|' इस प्रकार 'कल्याण का अंत कहानी में कथोपकथन पात्रों का स्वाभाव व मंतव्य प्रकट करने में सफल हुए|

भाषा-शैली:'कल्याण का अंत' कहानी की भाषा सरल, सशक्त और प्रवाहमयी है| उसमें 'अग्निबाण, अमृत-कुंड,संजीवनी जैसे तत्सम शब्द, घर, आँख, मछली जैसे तद्भव शब्द, कीमत, पानी, बेटा जैसे देशज शब्द, तालाब, फैसला, मुमकिन जैसे उर्दू शब्द, रिटर्न, सेल, चार्ज जैसे अंग्रेजी शब्द शामिल

हैं| इसके अलावा 'पिंड छुडाना, कायापलट, प्रेत सवार होना, दिमागी घोड़े दौडाना, जैसे मुहावरों ने उसमें चार चाँद लगा दिए|

शैली:'कल्याण उसकी संजीवनी था, कर्म-स्थल था, ऊर्जा-स्रोत था, कुल जमा पूँजी था'..जैसे वर्णात्मक कथनों से कोचाई मंडल और कल्याण तालाब का अविनाभाव संबंध सुन्दर ढंग से व्यक्त हुआ | इसी प्रकार निष्ठुर लोगों के आक्रमण का शिकार लोखट पहाड़ी जंगल और उससे बहती नदी का मार्मिक वर्णन हुआ| "पहाड़ अब बिल्कुल छीन-झपटकर हरण कर लिये गये | चीर के उपरांत लुटा-पिटा सा नंगा हो गया था | नदी नदी नहीं जैसे किसी विधवा की उजड़ी माँग हो गयी थी" एक ओर तालाब के पानी की महिमा-संबंधी दंत कथाएँ, गोताखोरी में कोचाई मंडल को हासिल महारत विषयक किंवदंतियाँ रोचक बन पड़ी, तो दूसरी ओर "तालाब के होने से आसपास के बहुत बड़े क्षेत्रफल में जलस्तर नियंत्रित रहता है | खेती की ज़मीनों में नमी बनी रहती है | आसपास के तापमान में एक आर्द्रता रहती है...एक साथ नहाने-धोने से सामाजिकता और सह अस्तित्व की भावना का विकास होता है" जैसे व्याख्यान, 'पता नहीं किस अर्जुन ने या किस राम ने अग्निवाण चलाया कि सौ वर्षों से भी ज्यादा उम्रवाला कल्याण तालाब सूख गया जैसे काव्यात्मक अभिव्यक्तियों से कल्याण के अंत' की असाधारणता उससे कोचाई की मर्मांतक पीड़ा का इज़हार हुआ |

शीर्षक की सार्थकता : 'कल्याण का अंत' सामाजिकता, सह अस्तित्व भावना और परोपकार भावना का अंत है | शहरीकरण के कारण निष्ठुर मानवों के हाथों प्रकुति-संतुलन के वरदान जैसे पहाड़, जंगल और नदी-तालों के अंत का अनंत सिलसिला है | सौ वर्षों से भी अधिक उम्रवाला, जल-स्तर तिल-भर भी न घटनेवाला कल्याण तालाब का एकाएक सूखकर मरुस्थल बन जाना प्रकृति पर मानवों के अत्याचारों का जीता-जागता प्रमाण है और शीर्षक को सार्थक ठहरता है |